COGNITIVE DEVELOPMENT

DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY

AND COLLEGE SHAHPUR PATORY SAMASTIPUR

SUB- DEVELOPMENTAL PSYCHOLOGY
YOUTUBE ON – ANDC LNMU EDUCATION BY DR AMAR SIR

संज्ञानात्मक विकास (Cognitive Development) क्या है?

संज्ञानात्मक विकास एक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति की मानसिक क्षमताओं और कार्यों का विकास होता है।यह प्रक्रिया व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु तक चलती रहती है और इसमें व्यक्ति की सीखने की क्षमता, स्मृति, ध्यान, और समस्या-समाधान कौशल का विकास शामिल होता है।

संज्ञानात्मक विकास के चरण

1. संवेदी-गतिशील चरण (Sensory-Motor Stage): यह चरण जन्म से लेकर 2 वर्ष की आयु तक चलता है, जिसमें व्यक्ति की संवेदी और गतिशील क्षमताओं का विकास होता है।

2. पूर्व-प्रचालन चरण (Pre-Operational Stage): यह चरण 2 से 7 वर्ष की आयु तक चलता है, जिसमें व्यक्ति की मानसिक क्षमताओं का विकास होता है, लेकिन अभी भी तर्कसंगत सोच की कमी होती है।

3. प्रचालन चरण (Operational Stage): यह चरण 7 से 11 वर्ष की आयु तक चलता है, जिसमें व्यक्ति की तर्कसंगत सोच और समस्या-समाधान कौशल का विकास होता है।

4. औपचारिक प्रचालन चरण (Formal Operational Stage): यह चरण 11 वर्ष की आयु से लेकर वयस्कता तक चलता है, जिसमें व्यक्ति की अमूर्त सोच और तर्कसंगत सोच का विकास होता है।

संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत

1. जीन पियाजे का सिद्धांत: जीन पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास के चार चरणों का वर्णन किया है, जो व्यक्ति के जन्म से लेकर वयस्कता तक चलते हैं।

2. लेव वायगोत्स्की का सिद्धांत: लेव वायगोत्स्की ने संज्ञानात्मक विकास में सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों के महत्व पर जोर दिया है।

3. जेरोम ब्रूनर का सिद्धांत: जेरोम ब्रूनर ने संज्ञानात्मक विकास में भाषा और संचार के महत्व पर जोर दिया है।

निष्कर्ष

संज्ञानात्मक विकास एक जटिल और बहुस्तरीय प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति की मानसिक क्षमताओं और कार्यों का विकास होता है। यह प्रक्रिया व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु तक चलती रहती है और इसमें व्यक्ति की सीखने की क्षमता, स्मृति, ध्यान, और समस्या-समाधान कौशल का विकास शामिल होता है।

जीन पियाजे का सिद्धांत (Jean Piaget's Theory)

जीन पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास के चार चरणों का वर्णन किया है:

संवेदी-गतिशील चरण (Sensory-Motor Stage): यह चरण जन्म से लेकर 2 वर्ष की आयु तक चलता है, जिसमें व्यक्ति की संवेदी और गतिशील क्षमताओं का विकास होता है।

पूर्व-प्रचालन चरण (Pre-Operational Stage): यह चरण 2 से 7 वर्ष की आयु तक चलता है, जिसमें व्यक्ति की मानसिक क्षमताओं का विकास होता है, लेकिन अभी भी तर्कसंगत सोच की कमी होती है।
प्रचालन चरण (Operational Stage): यह चरण 7 से 11 वर्ष की आयु तक चलता है, जिसमें व्यक्ति की तर्कसंगत सोच और समस्या-समाधान कौशल का विकास होता है।
औपचारिक प्रचालन चरण (Formal Operational Stage): यह चरण 11 वर्ष की आयु से लेकर वयस्कता तक चलता है, जिसमें व्यक्ति की अमूर्त सोच और तर्कसंगत सोच का विकास होता है।

पियाजे के सिद्धांत की विशेषताएं

चरणों की क्रमिकता: पियाजे के अनुसार, संज्ञानात्मक विकास के चरणों की क्रमिकता होती है, जिसमें प्रत्येक चरण पिछले चरण पर आधारित होता है।
मानसिक संरचनाओं का विकास: पियाजे के अनुसार, संज्ञानात्मक विकास में मानसिक संरचनाओं का विकास होता है, जो व्यक्ति की मानसिक क्षमताओं को बढ़ावा देते हैं।
सक्रिय सीखने: पियाजे के अनुसार, सक्रिय सीखने व्यक्ति के संज्ञानात्मक विकास को बढ़ावा देता है।

पियाजे के सिद्धांत की आलोचना

चरणों की कठोरता: पियाजे के सिद्धांत की आलोचना की गई है कि चरणों की कठोरता होती है, जो व्यक्ति के संज्ञानात्मक विकास को सीमित कर सकती है।
सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों की अनदेखी: पियाजे के सिद्धांत की आलोचना की गई है कि सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों की अनदेखी की गई है, जो व्यक्ति के संज्ञानात्मक विकास को प्रभावित कर सकते हैं।

निष्कर्ष

जीन पियाजे का सिद्धांत संज्ञानात्मक विकास के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान है। उनके सिद्धांत ने संज्ञानात्मक विकास के चरणों की क्रमिकता और मानसिक संरचनाओं के विकास पर जोर दिया है। हालांकि, उनके सिद्धांत की आलोचना भी की गई है कि चरणों की कठोरता और सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों की अनदेखापन की गई है।

लेव वायगोत्स्की का सिद्धांत (Lev Vygotsky's Theory)

लेव वायगोत्स्की ने संज्ञानात्मक विकास में सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों के महत्व पर जोर दिया है। उनके अनुसार:
सामाजिक और सांस्कृतिक कारक: सामाजिक और सांस्कृतिक कारक व्यक्ति के संज्ञानात्मक विकास को प्रभावित करते हैं।
भाषा और संचार: भाषा और संचार व्यक्ति के संज्ञानात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
सक्रिय सीखने: सक्रिय सीखने व्यक्ति के संज्ञानात्मक विकास को बढ़ावा देता है।

वायगोत्स्की के सिद्धांत की विशेषताएं

सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों का महत्व: वायगोत्स्की के अनुसार, सामाजिक और सांस्कृतिक कारक व्यक्ति के संज्ञानात्मक विकास को प्रभावित करते हैं।
भाषा और संचार का महत्व: वायगोत्स्की के अनुसार, भाषा और संचार व्यक्ति के संज्ञानात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
सक्रिय सीखने का महत्व: वायगोत्स्की के अनुसार, सक्रिय सीखने व्यक्ति के संज्ञानात्मक विकास को बढ़ावा देता है।

वायगोत्स्की के सिद्धांत की आलोचना

सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों की अधिकता: वायगोत्स्की के सिद्धांत की आलोचना की गई है कि सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों की अधिकता होती है, जो व्यक्ति के संज्ञानात्मक विकास को सीमित कर सकती है।

व्यक्तिगत कारकों की अनदेखी: वायगोत्स्की के सिद्धांत की आलोचना की गई है कि व्यक्तिगत कारकों की अनदेखी की गई है, जो व्यक्ति के संज्ञानात्मक विकास को प्रभावित कर सकते हैं।

निष्कर्ष

लेव वायगोत्स्की का सिद्धांत संज्ञानात्मक विकास के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान है। उनके सिद्धांत ने सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों के महत्व पर जोर दिया है, जो व्यक्ति के संज्ञानात्मक विकास को प्रभावित करते हैं। हालांकि, उनके सिद्धांत की आलोचना भी की गई है कि सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों की अधिकता और व्यक्तिगत कारकों की अनदेखी की गई है।